ओ३म्
सत्यम्
शिवम्
सुन्दरम्
मनुष्य बनो, अपनी संतान को मनुष्य बनाओ !
विश्वमित्र मेधावी, श्री गुरुजी
संस्थापक–अध्यक्ष: अहिंसा मित्र मण्डलम् न्यास, विदिशा (म.प्र.)
स्नातक : गुरुकुल अयोध्या फैजाबाद (उ.प्र.)
पूर्व कुलपति : गुरुकुल सिराथू कौशम्बी, इलाहाबाद (उ.प्र.)
वैदिक प्रवक्ता एवं वेद कथा मर्मज्ञ
संरक्षक : वरिष्ठ नागरिक सेवा समिति, विदिशा (म. प्र.) 464001
मोबा. : 9630937848
निवास : 95, गायत्री सदनम्, वार्ड क्र. 14, अन्दरकिला, विदिशा (म. प्र.)

प्रस्तावना

ईश्वर ने संसार में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। उसके मुखमण्डल भाग में सुन्दर आंखे, कान, नाक, मुँह, मुँह में बोलने के लिए जिह्वा और दांतों का विधिवत् संयोजन किया गया है। चलने के लिए दो पैर तथा कर्म करने के लिए दो हाथ दिए हैं और वेद् में आदेशात्मक उपदेश दिया गया है कि मनुष्य सर्वत्र ईश्वर की सत्ता को मानकर सारा धन ऐश्वर्य भी ईश्वर का मानकर व जानकर संसार में ईश समर्पित एवं त्यागपूर्वक सत्कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा और तद्नुसार प्रयत्न करे। उसके लिए ईश्वर ने मनुष्य मात्र को विवेकशील बुद्धि दी है जिससे वह सदा कर्तव्य-अकर्तव्य, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म आदि का निर्णय करने में समर्थ होता है एवं सत्य-धर्म-कर्तव्य कर्मों को करके सुखी तथा असत्य अधर्म अकर्तव्य कर्मों को करके दु:खी होता है। न केवल इतना ही उसके किए हुए कर्मों का प्रभाव स्वयं उस पर परिवार एवं समाज पर भी पड़ता है, तद्नुसार उसका व्यक्तित्व बनता है। अत: वेद का आदेश है **'मनुर्भव'** है मानव तू मनुष्य बन। अर्थात् मानवयोग्य कर्म कर परोपकारमय जीवन बना केवल स्वार्थ सिद्धि में पड़कर पशुवत् जीवन मत बिता। धर्माचार्य श्री विश्वमित्र मेधावी आर्य जगत श्री गुरु जी के ख्याति प्राप्त वैदिक पथ के पथिक वैदिक धर्म प्रचारक विद्वान है, जिन्होंने अपनी स्नातकीय शिक्षा दीक्षा प्रसिद्ध गुरुकुल अयोध्या (उ.प्र.) में प्राप्त की तथा गुरुकुल सिराथू इलाहाबाद (उ. प्र.) के कुलपति पद को कई वर्षों तक सक्रिय रूप से सफलता पूर्वक संभाला। तथा लगभग पचास वर्षों से वेदप्रचार में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे हैं। 50 वर्षों तक दिल्ली में अनेक आर्य समाजों धर्माचार्य रहे। उनकी वाणी में ओजपूर्ण विशेष शक्ति है जिससे कठिन से कठिन विषय को भी वे सरलता एवं प्रामाणिकता से समझाते हैं। आप वेदकथा के मर्मज्ञ हैं। लेखन कार्य में भी आप कुशल हैं। गम्भीर विषय को सरलता एवं सहजता से लिखते हैं।

उनके द्वारा लिखी गई प्रस्तुत लघु पुस्तक **'मनुष्य बनो-अपनी सन्तान को मनुष्य बनाओ'** अत्यन्त उपयोगी, सारगर्भित, ज्ञानवर्धक एवं व्यावहारिक पुस्तक है, जिसको पढ़कर समझकर व्यवहार में लाकर प्रत्येक मनुष्य लाभ उठा सकता है।

मैं उनको इस पुस्तक को लिखकर प्रस्तुत करने के लिए हार्दिक शुभाशंसा एवं बधाई देता हूँ, तथा विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि इस पुस्तक का स्वाध्याय करके अधिक से अधिक स्त्री-पुरुष लाभ उठाकर निरन्तर अपने जीवन को उन्नत करेंगे तथा सदा अपनी सन्तान को भी सत्कर्म हेतु प्रेरित करते रहेंगे।

प्रो. प्रकाशचन्द्र वेदालंकार

141/253 सरस्वती चौक, मुलुण्ड कालोनी, मुम्बई-400082

सेवानिवृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)

के. जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठ, विद्याविहार,

मुम्बई-400077, मोबा. : 9892171085

मनुष्य बनो, अपनी संतान को मनुष्य बनाओ !

मानव जीवन भगवान की सृष्टि में सर्वोत्तम उत्कृष्ट रचना है।

चौरासी कोटि योनियों में मानव जीवन दिव्य-भव्य-सुन्दर वरदान है। सर्वोच्च सुकृति है। सच्चिदानंद भगवान की सर्वोच्च रचना है मनुर्भव जनया, दैव्यमजनय। ऋग्वेद के 10 वे मण्डल में परमपिता भगवान का आदेश है कि है मानव ! तू पहले स्वयं मानव बन और अपनी संतान को मानव बना। क्योंकि मानवता के बिना जीवन निर्थक है व्यर्थ है निष्प्रयोजन है।

जीवधारियों में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो विवेक बुद्धि से परिपूर्ण है। महाभारत में महामुनि वेद व्यास कहते हैं कि गुह्यं बह्म तदिदं ब्रवीमिनहि मानुषाद श्रेष्ठतरं हि किचिंत। ब्रह्म तत्व का रहस्य यही है कि सृष्टि में मानव ही प्रभु की सर्वश्रेष्ठ रचना है। अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि देव दयानन्द लिखाते हैं जो मनन शील होता है वही मानव है। निक्तकार लिखाते हैं कि मत्वा कर्माणि सीव्यतिस मनुष्य:। जो विचार करके ही कर्म करता है वही मनुष्य है। पाश्चात्य जगत् के विद्वान पास्कल के मतानुसार मनुष्य ही इस संसार में सर्व श्रेष्ठ बौद्धिक प्राणी हैं। मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति और उसकी अभिव्यक्ति करने में समर्थ होता है तथा वही कर्मकर्ता है। ऐतरेय उपनिष्द में कहा गया है कि मनुष्य विश्व शक्ति की सुकृति है। कुरान शरीफ के मत में मनुष्य पृथ्वी पर अल्लाह का एक मात्र प्रतिनिधि है और अल्लाह ने मनुष्य को सर्व श्रेष्ठ आकार का बनाया है।

बाईबिल में भी मनुष्य को शांति का अग्रदूत बताया है। श्री शंकराचार्य ने मनुष्यत्व-मुमुक्षत्व तथा महापुरूष से संश्रय अति दुर्लभ पदार्थों के रूप में गणना की है। जैन मतानुसार महावीर स्वामी कहते हैं कि जब अशुभ कर्मों का नाश होता है तभी मानव जीवन मिलता है। उत्तरायण सूत्र में महावीर स्वामी वर्णन करते हैं कि मानव जन्म चिरकाल के बाद ही शुभ कर्मों से ही मिलता है। बोद्ध धर्म के अनुसार मानव को ही देवरूप स्वीकार किया गया है। मानव योनि उत्तम योनी है

। भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यही मानव जीवन भगवान के अति निकट है। वह तो नर से नारायण बन सकता है यह जीवन अनेक शुभ कर्मों से ही मिलता है। ज्ञान–विज्ञान–दर्शन–मनोविज्ञान आत्मज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति भी इसी मानव जीवन में सम्भव है। अनेक जन्मों के पुण्योंदय से ही नर तन मिलता है। मानव जीवन का प्रयोजन परोपकार के लिये ही है। परोपकारार्थम ईदम–शरीरम्। सत्वा युनक्ति तस्मैत्वा युनिक्ति कस्मैय कर्मणे वाम् वेषायवाम । यजुर्वेद प्रथम अध्याय में कहा गया है कि इस सर्व श्रेष्ठ मानव शरीर में आत्मा को कौन भेजता है । और किस कार्य के निमित्त निराकार सर्वरक्षक–सर्वशक्तिमान भगवान ने यह सर्वोत्तम मानव शरीर दिया है। इस जीवन का उद्देश्य यज्ञमय श्रेष्ठतम कर्म करने के लिये ही है।

मानव जीवन सर्वोत्तम है कन्फ्युशियस कहते हैं कि चाहे हम किसी भी दृष्टि से देखें विचार करें मानव इस विश्व का सूत्र है इस प्रकार मनुष्य ईश्वर के अति निकट है। आत्म ज्ञान से दीप्त जीवन ही चेतना का लक्षण है। मानव की रचना दो प्रकार की है एक तो स्थूल शरीर है जो मानव के बाह्य विधान का प्रतीक है। दूसरा प्राणतत्व है जो उसकी चेतना का लक्षण है। चेतना तत्व के आधार पर ही मनुष्य को चेतना का प्रवाह माना गया है।

अरस्तु ने इस के साथ ही सृष्टि में व्यक्ति रूप में ही उसका अध्ययन किया और कहा कि मानव जीवन सृजनहार भगवान की अनमोल रचना है । दार्शनिक सुकरात के अनुसार आत्मज्ञानहीन मानव जीवन व्यर्थ है मानव साधना द्वारा जीवन के शाश्वत मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होता है मानव जीवन है कि वह अपने लक्ष्य को जानने में समर्थ है और लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

अन्य योनियों में जीवन को समझने और कर्म करने की शक्ति नहीं है क्योंकि भोग योनि में पशु–पक्षी अन्य प्राणी भोग भोगने में परतन्त्र हैं लेकिन मानव जीवन तो कर्म करने में स्वतन्त्र है आत्मज्ञान पाने में जीवन के रहस्यों से वह परिचित हो जाता है। मानव अपना ज्ञाता विख्याता और निर्णायक स्वयं है।

इस सम्बन्ध में यूनानी दार्शनिक प्रोटेगोरस का कथन है कि

मनुष्य समस्त वस्तुओं का माप दण्ड है। ज्ञानी लोग कहते हैं कि आत्मा को देखो स्वयं को जानो, सृष्टि सृजनहार भगवान की दया–करूणा के पात्र बनों। यमाचार्य के पास जाकर नचिकेता ने आत्म ज्ञान मांगा।

यमाचार्य ने कठोपनिषद में कहा है कि हे मनुष्यों ! उठो !जागो ! सावधान हो जाओ ! और श्रेष्ठ महापुरूषों के पास जाकर आत्मज्ञान प्राप्त करो। ज्ञान पाकर ज्ञानी मानव सदाचार निष्ठ और शुद्ध अन्तःकरण वाला होता है। फिर दुष्कर्मों तथा दुष्ट व्यवहार से बच जाता है। पुण्य कर्मों में प्रवृत्त होकर समाज परिवार राष्ट्र को सुखधाम बनाने का प्रत्यन करता है। धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष की प्राप्ति में अत्यन्त पुरूषार्थ करके अमर यश पाने की साधना में सनद्ध हो जाता है। सुविचारों–सदगुणों एवं सु–संस्कारों से ही वह तो मानव वन जाता है और अपनी अपनी संतानों को मनुष्य बनाने में जुटजाता है। यह जानना आवश्यक है कि मानव शरीर पाने मात्र से मानव नहीं बनता। अब तक उसमें मानवता नहीं होती। मानव होकर पिशाच दुष्ट, दुराचारी, चोर, लुटेरा हिंसक, भयंकर, अपराधी बनकर समाज, परिवार, राष्ट्र के विनाश का कारण बन जाता है। सर्वत्र त्राहि–त्राहि की ध्वनि गूंजने लगती है। फिर चारों ओर भय आतंक का वातावरण बन जाता है। मानव शरीर में भेड़िये, कुत्ते, उल्लू, गरूण, चिड़ा और गीदड़, गृध्र आदि प्राणियों की आदत का शिकार हो जाता है। इन पाशविक प्रवृत्तियों से मानव को छुटकारा दिलाना होगा ये दानवता के प्रतीक हैं। भेड़िये का स्वभाव क्रूरतम होता है वह तो अचानक हमलावर होता है हिंसा करता है। उल्लू की आदत अन्धाकार पूर्ण होती है वह दिन में नहीं देखाता रात्रि में देखना ही स्वभाव है। स्व–यातुम यहि। कुत्ते की आदत भी छोड़ो वह तो स्वजाति के साथ झगड़ा करता है स्वजाति का द्रोही है। कोक चिढ़ा की आदत कामी होती है। सुपर्ण गरूण की आदत अहंकार पूर्ण होती है। उसे अपने शरीर के सौन्दर्य का अभिमान होता है। छ्टा प्राणी गिदड़ा–गृद्ध होता है जो भयंकर लोभी, लालची होता है मरे हुये पशुओं का मांस खाने हेतु आकाश से धरती पर आकर मरे हुये प्राड़्यिों का मांस का सेवन करता है। ये सब प्राणी भोगयोनी में अविधा के अन्धेरे में रहते हैं विवेक बुद्धि नहीं होती हैं। जो अपने को भी नहीं पहचानते।

इसलिये मानवता ही देवत्व की जननी है। मेरा आत्म चिन्तन है कि बचपन सेही बच्चों में मानवीय गुणों का सुसंस्कारों का शिक्षण अनिवार्य किया जाना चाहिये। विद्यामंदिरों में मानवता का पाठ पढ़ाया जाना चाहिये। शिक्षा का उद्देश्य मानव निर्माण ही परमावश्यक है। सभी माता-पिता, आचार्य जन और सभी सरकारें बिना समय गवायें मानवीय गुणों के विकास में पूर्ण शक्ति के साथ पूर्णमनोयोग से मानव जीवन के निर्माण में जुट जाना ही श्रेयस्कर होगा। मानव निर्माण की शिक्षा ही मानव को बनाने में अति उत्तम होगी। सुसंस्कारों सुशिक्षा से ही मानवता का सृजन होता है सदगुरू धार्मिक सदाचारी आस्तिक माता-पिता सभी सरकारें मिलकर एक होकर उक्त दिशा में अपने कर्तव्य पालन में कर्मयोगी बनकर धरती को मानवता से सजायें। कुछ करना है तो मानवता का निमार्ण करो। मानव पशुता से मुक्त होना ही चाहिये।

हम सभी परमपिता भगवान की अमर संतानें हैं। मानवता ही सत्यम शिवम् सुन्दरम का परिधान है सदगुणों की खान हैं। इसी में दित्यता-भव्यता और भद्रता के दर्शन होते हैं। अत: मानवता ही धरा-धाम का शोभन अलंकार है।

1. भगवान ने यह मानव का जन्म अनेक शुभ-पुण्य कर्मों की परिणिति वरदान के रूप में प्रदान की है। नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं। जन्म-जन्म के शुभकर्मों का होता, जब तक मेल नहीं। सब प्राणियों का सृजनहार परम पिता भगवान एक ही है। अत: सभी मनुष्यों को परस्पर, भ्रातृभाव तथा मित्रता की दृष्टि से ही रहना चाहिये। अपनी स्वार्थ सिद्धी करने के लिये अन्य प्राणियों की हिंसा नहीं करनी चाहिये। मानव इर्ष्या-द्वेष भाव से दूर रहे और निष्काम प्रेम से सभी से सद् व्यवहार से परिवार, समाज, राष्ट्र का ही निर्माण करता रहे।

2. मानवता का लक्ष्य दिव्य शक्ति, दिव्य शांति, दिव्य ज्योति, दिव्य आनंद प्राप्त करना है।

3. आत्मा अजर अमर है, शरीर, मन एवं बुद्धि का अधिष्ठाता है। शरीर तो नश्वर है क्षण भंगुर है अतएव निरन्तर सर्वजन सुखाय,

सर्वजनहिताय अपने जीवन को लगाना चाहिये।
4. प्रत्येक व्यक्ति सदा अविद्या-अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करे। मृत्यु से अमरता और पाप से पुण्य, अधर्म से धर्म की ओर बढ़ने का यत्न करते रहना चाहिए।

मानवता और पशुता में भारी अन्तर है। मनुष्य भगवान की सृष्टिमें ज्ञानवान्-ज्ञान योगी, कर्मयोगी बन कर धर्म का आचरण करके अमर होने का भागी बन जाता है। पशु भोग योनी में ही पड़ा रहता है। मनुष्य तीन प्रकार से स्वभाव वाले होते हैं।

1. उत्तम स्वभाव वाले मनुष्य धर्मकर्म में लगे रहते हैं कितने ही संकट, विकट भयंकर विघ्न बाधाओं के आने पर अपने कर्तव्य से कभी भी विमुख नहीं होते, पीछेनहीं हटते।

2. मध्यम स्वभाव के मनुष्य विघ्न आने पर विघ्नभय से सुकर्म करते-करते बीच में ही अर्माचरण से विमुख हो जाते हैं।

3. तीसरे कोटि के मनुष्य वे होते हैं जो विघ्नों के डर से पुण्य का कोई भी कर्म आरम्भ नहीं करते। उनको धर्म के मानवता के कर्म अच्छे ही नहीं लगते, वे कुकर्मों की कीचड़में ही तत्पर रहते हैं।

मानव की पहचान चार प्रकार से होती है, महान, अर्थशास्त्री श्री चाणक्य के कथन के अनुसार

यथा चतुर्मि: कनकम् परीक्ष्यते निघार्षण-छेदन ताप ताड़नै. तथा पुरूष: परी रक्ष्यते-त्यागेन-शीलेन-गुणेन कर्मणा॥

जैसे सोना रगड़ने-काटने, तापने और पीटने से परखा जाता है। उसी प्रकार मानव, त्याग शील-सदगुण और उत्तम कर्मो से पहचाना जाता है। अतएव मानव मानव बनकर इस धरती पर करूणा-दया-सदप्रेम, संवेदन शीलता आदि गणों से विभूषित होकर मानव धर्म का पालन करने में जुटा रहे। मानवीय आचरण से कभी विमुख न हो। इस जीवन में पुनर्जन्म को ध्यान में रखते हुये वर्तमान जीवन में सभी प्राणियों के साथ हिंसा पापाचार से दूर रहे। नारी जाति एवं बेटियों पर बलात्कार, मारकर फैंक देना ये जघान्य अपराध अमानवीय है। इसे समाज और सरकारें कठोरतम कानून से रोकने का प्रयास करें और नारी जो नारायण की जन्मदात्री है। आज की बेटियां

कल की मानव जन्म देने वाली माँ हैं। इस लिये इस ओर समूचा राष्ट्रएक होकर नारी को जघन्य अपराधों से बचायें।

वेद के अनुसार मनुष्य मनुष्य बन कर अपनी अपनी संतानों को सुसंस्कारों से सुविचारों से अलंकृत कर मानवता के निर्माण कार्य में अनवरत जुटा रहे। निज जीवन को साकार कर अमर हो जाने की साधनाओं में लगा रहे। हम अपना वर्तमान ऐसा बनायें जिससे पुनर्जन्म भी सफल हो जाये।

विजय गुप्ता, आशुकवि, मदनगीर दिल्ली

मुक्तक :

हवाओं से उजाले कभी कैद नहीं होते,
माँ की ममता में बच्चों के भेद नहीं होते,
तोप के गोले से आसमान में छेद नहीं होते।
यह माना हमने कि कफन में जेब नहीं होती।

मुक्तक:

मानव हो तो मनन कीजिये।
मानव–मानव में भेद न समझ।
चित्त के चैतन्य में उसकी चेतना समझ।
हृदय के प्रेम उसकी प्रेरणा समझ। वेद पढ़के उसकी वेदना समझ।

मुक्तक:

मानव हो तो मनन कीजिये।
चित की चिन्ता छोड़िये, आप चिन्तन कीजिये।
श्वासों में खुशबू गुलाब की घुल जायेगी।
सत्कर्मों का किया ही साथ जायेंगा।

मुक्तक :-

सब कुछलुटगया सरे आम सपना बांकी है
अब तो शवनम की जगह तपन बांकी है,
आज आंख भी हैरत से परेसां है
आज इन्सान लापता है, कफन बाकी है।

गीत :-

मानव होकर मानवता से तुमने कितना प्यार किया है।
या मानवता का कितना उपकार किया है।
मैं मानव हूँ मानवता की ज्योति जगाने आया हूँ।
मै जीवन के अभिशापों को वरदान बनाने आया हूँ।

ओ ! मानव ! यदि देवत्व चाहते हो तो दानवता को दफना दो आ मानव ! मानव को गले लगालो ।।

ऋग्वेद का ज्ञान अग्नि ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान वायु ऋषि को, अथर्व वेद का ज्ञान अंगिरा को, सामवेद का ज्ञान आदित्य ऋषि को मिला।

सृष्टि के प्रारम्भ में भगवान ने दिया प्रभू मिलन से ही आनंद मिलता है।

संध्या–स्वाध्याय–सतसंग से ब्रह्म मिलन होता है।

गायत्री महामंत्र के गान से अनन्त महिमा मंडित सर्वरक्षक ओम का आनंद प्रद संगीत मेरे मानसरोवर में गूंज रहा है। वह तो सबकी रक्षा करता है। तेरी भी रक्षा अवश्य ही करेगा।

वैदिक ज्ञानार्जन में साधना में उपासना में अनमोल जीवन जीने का संकल्प करें और शांत रहें मौन रहें।

आगे आगे बढ़ते रहना ही जीवन है, रूकना नहीं
हिम्मत हार मत बैठो, जीवन में कुछ करना है। मनको मारके मत बैठो, आपकी हिम्मत काम आयेगी, आत्म विश्वास कम मत होने देना।
मनोबल ऊँचा बनाये रखना। ये है मानवता के दिव्य लक्षण।
विद्वानों की नहीं कर्मशीलों की कमी है, सविधानों की नहीं, निष्ठवानों की कमी है। यहाँ भगवानों की नहीं, इन्सानों की कमी है।

धन-दान बिना, तन प्राण बिना, जीवन ज्ञान बिना व्यर्थ है। इसीलिये मनुष्य इस धरा पर मनुष्य बनकर रहे और अपनी संतान को मनुष्य बनाये।
मानवता के बिना जीवन व्यर्थ है।

मानव जीवन का एक मात्र लक्ष्य सुख-शन्ति-आनंद की प्राप्ति है और दु:खों की निवृत्ति ही है। परा-अपरा-विद्या द्वारा आत्मज्ञान पाकर समूची सृष्टिके सृर्जन हार परमात्मा को पाना ही मुख्य उद्देश्य है। मानव जीवन ही मोक्ष का साधन है मानव जीवन में अध्यात्मिक बल का महत्वपूर्ण स्थान है। आध्यात्मिक जीवन में व्यक्ति के सदाचारी स्वाध्यायशील आशावादी दृढ नष्ठवान और बलवान् बनना चाहिये। आत्म वल मनोवल तथा संसार में स्वस्थ रह कर जियो।

शारिरिक वल नितान्त आवश्यक है जो व्यक्ति अत्यन्त पुरूषार्थ से स्वस्थ रहने की साधना करता है और भद्र ही देखाता है भद्र ही सुनता है एवं भद्र ही करता है प्राणायाम-व्यायाम भ्रमण से निरन्तर स्वस्थ रहने का अभ्यास करता है। साथ ही संध्या सत्संग से निज जीवन को सफल बनाता है। आलस-प्रमाद से दूर रहता है ऐसा मानव जीवन दिव्य होता है।

नर तन पाकर विशुद्ध अनत: करण से ज्ञानार्जन
पाने का यत्न करते रहना ही श्रेयस्कर है।

अमृत वचन

ऐ मानव कुछभी बन कायर मत बन ठोकर मार पटक मत माथा
तेरी राह रोकते पाहन कुछभी बन कायर मत बन।
लहरो से डर कर नौका कभी पार नही होती
कोशिश करने वाली की कभी हार नहीं होती।

❄

सत्संग सुधा का पान करो
ऊंचा जीवन निर्माण करों।
मानवता का उत्थान करों

धरती पर सुख शान्ति बढ़ाओ दे कर निज श्रम शक्ति
मानवता का अर्थ यही है और यही है प्रभु भक्ति।
उठो मानव आंखें खोलो, सो चुके हो अब मत सोना
स्वर्ण सी घड़िया जिन्हें तुम खो चुके हो—अब न खोना

❄

बहुत ही सुन्दर समय है जाग कर जीवन बिताओं।
पर कभी भी कर्तव्य पालन में न तुम आलस्य लाओ।

❄

मन की आंखें खुल जायें तो
क्या करना है और ज्ञान का।

❄

गीतः-

कुछकाम करके जाना-दुनियां से जाने वाले
जाते हैं रोज लाखों बेकार जीने वाले।
कुछकाम कर के जाना-दुनियां से जाने वाले।
चौरासी लाख जन्म खोये-हर जन्म मरण रोये
अब व्यर्थ मत गवाना-दिन चार जीने वाले॥
हिंसा, असत्य, चोरी कर के माया जोड़ी
क्या साथ ले जायेगा -सब छोड़के जाने वाले।
झूंठे जगत् के रिस्तों से क्या करता है मोहब्बत।
जाते हैं रोज लाखों-बेकार जीने वाले।
सब छोड़ने पड़ेंगे-नहीं साथ जाने वाले।
मर कर भी गम न होगा-कुछनेक काम करने वाले।
अब वेखवर न रहना-दुनियां में रहने वाले।
कुछकाम करके जाना दुनियां में रहने वाले।
जाते हैं रोज लाखों बेकार जीने वाले।

गीतः-

इन्सान की खुशबू रहती है इन्सान बदलते रहते हैं।
दरवार लगा रहता यहां। दरवान बदलते रहते हैं।
जो हिम्मत वाले मॉंझी हैं। तूफानों से टकराते हैं।
इन तूफानों का क्या कहना। तूफान बदलते रहते हैं।
जो पक्के हैं इकरारों के इकरारों पर मर मिटते हैं।
दस्तखॉंन है दुनियां सब मौत का लुकमा बनते हैं।
रहता है दस्तखांन-विछा मेहमान बदलते रहते हैं।
यह मेला है दो दिन का कुछकर चलिये-कुछदे चलिये
इक दिल की है हुकुमत वस्ती है। सुल्तान बदलते रहते हैं।
ऐ भोले मानव पागल तू क्यों मरता है वरदानों पर
बलिदान ही जिन्दा रहते हैं वरदान बदलते रहते हैं।
लक्ष्य ढूढ़्ते है वे जिनको वर्तमान से प्यार नहीं है
एक पल की गरिमा पर अधिकार नहीं है।

मूल्य - 10.00/-

मुद्रक - आनंद ऑफसेट, विदिशा